48

उत्पादन का उसके साधनों में वितरण
(भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन, लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ)

अभ्यास

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न**

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 481 व 482 का अवलोकन कीजिए।

❖ **अतिलघुउत्तरीय प्रश्न**

अतिलघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 482 व 483 का अवलोकन कीजिए।

❖ **लघुउत्तरीय प्रश्न**

1. उत्पादन को परिभाषित कीजिए तथा उत्पादन के उपादानों के नामों का उल्लेख कीजिए।

उ०– **उत्पादन**- किसी वस्तु के तुष्टिगुण में वृद्धि करने की प्रक्रिया को उत्पादन कहते हैं। अर्थशास्त्र में 'उत्पादन का अर्थ किसी वस्तु के आर्थिक तुष्टिगुण में वृद्धि करना है।

उत्पादन के उपादान– भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन, उद्यम आदि को उत्पादन के उपादान के नाम से जाना जाता है।

2. उत्पादन के साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उ०– उत्पादन के साधनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं–

(i) भूमि– अर्थशास्त्र की भाषा में वे सभी पदार्थ जो प्रकृति ने मनुष्य को नि:शुल्क प्रदान किए हैं भूमि कहलाते हैं। सामान्य रूप से भूमि का अर्थ पृथ्वी की ऊपरी सतह से लगाया जाता है। भूमि मानव का जन्म स्थल, क्रियाकलापों का केन्द्र व शरण स्थली है।

(ii) श्रम– मुद्रा रूपी फल का स्वाद चखने हेतु किया गया शारीरिक एवं मानसिक कार्य रम कहलाता है।

(iii) पूँजी– पूँजी मनुष्य द्वारा अर्जित किए गए धन का वह भाग है, जो भविष्य के लिए धन उत्पादन में लगा है।

(iv) संगठन– उत्पादन प्रणाली में संगठन उत्पादन का वह साधन है, जिसका महत्वपूर्ण कार्य उत्पत्ति के साधनों को सर्वोत्तम आकार में जुटाना है।

(v) उद्यम– किसी व्यवसाय को प्रारंभ करने तथा उसमें निहित जोखित उठाने के कार्य को 'उद्यम' कहते हैं।

3. वितरण का क्या अर्थ है? वितरण की परिभाषा लिखिए।

उ०– **वितरण का अर्थ–** वितरण का शाब्दिक अर्थ है, 'बँटवारा'। प्रश्न उठता है किसका बँटवारा और किसमें कितना बँटवारा? अर्थशास्त्र में वितरण का अर्थ है, "संयुक्त उत्पादन का उनके साधनों में उचित बँटवारा करना।" वितरण के माध्यम से उत्पादन के प्रत्येक साधन को उसका उचित अंश दिया जाता है। उत्पादन संयुक्त प्रयत्नों का प्रतिफल होता है। अत: उत्पादन के सभी उपादानों को उनका उचित प्रतिफल दिया जाता है। यह कार्य जिस व्यवस्था के माध्यम से किया जाता है, अर्थशास्त्र में उसे **वितरण** नाम दिया गया है।

वितरण की परिभाषाएँ– अर्थशास्त्रियों ने वितरण को निम्नवत् परिभाषित किया है–

"वितरण में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि समाज में उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से जिस संपत्ति का उत्पादन होता है, उसका बँटवारा इन साधनों के बीच कैसे किया जाए।'' **–प्रो० चैपमैन**

चैपमैन का मत है कि समाज में उत्पादन के उपादान जो उत्पादित करते हैं, उसी को इन साधनों के बीच बाँटने को अर्थशास्त्र में वितरण कहा गया है।

"वह समस्त धन, जिसका किसी समाज में उत्पादन होता है, अंतत: कुछ रीतियों या अन्य सूत्रों के द्वारा व्यक्तियों के पास पहुँच जाता है। यही वितरण की प्रक्रिया कहलाती है।" **–प्रो० सेलिगमैन**

प्रो० सेलिगमैन के अनुसार वितरण वह प्रक्रिया है, जिसमें कुछ सिद्धांतों और सूत्रों के माध्यम से समाज में उत्पादित धन को अपेक्षित साधनों तक पहुँचाया जाता है।

4. श्रम की परिभाषा लिखिए तथा उत्पादक और अनुत्पादक श्रम में अंतर बताइए।

उ०– **श्रम की परिभाषा–** श्रम को विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नवत् परिभाषित किया है–

"श्रम का अर्थ मनुष्य के आर्थिक कार्य से है, चाहे वह हाथ से किया जाए या मस्तिष्क से।" **–प्रो० मार्शल**

प्रो० मार्शल के अनुसार आर्थिक कार्य के लिए शरीर अथवा मस्तिष्क से किए समस्त प्रयास श्रम हैं। श्रम धन कमाने के लक्ष्य से जुड़ा होता है।

"श्रम का अर्थ मानव के उस शारीरिक अथवा मानसिक प्रयत्न से है, जो प्रतिफल की आशा से किया जाता है।"

–प्रो० टॉमस

प्रो० टॉमस के अनुसार मनुष्य शरीर या मस्तिष्क से धन पाने की इच्छा से जो कार्य करता है, श्रम कहलाता है।

श्रम का आशय मानव की उन शारीरिक या मानसिक चेष्टाओं से लगाया जाता है, जिनके बदले में उसे धन प्राप्त होता है। भीख माँगना, जुआ खेलना तथा लोगों की सेवा करना श्रम की श्रेणी में नहीं आते। इन्हें अनुत्पादक श्रम कहा जाता है।

उत्पादक और अनुत्पादक में अंतर– ऐसा शारीरिक अथवा मानसिक कार्य जिसे करने से किसी वस्तु अथवा सेवा का उत्पादक होता है, उत्पादन श्रम कहलाता है। उत्पादक श्रम के बदले आय प्राप्त होती है; जैसे– बढ़ई द्वारा लकड़ी का सामान बनाना, सुनार द्वारा स्वयं आभूषण बनाना, शिक्षक द्वारा अध्यापन कराना आदि। इसके विपरित ऐसा श्रम जिसे करने से किसी वस्तु या सेवा का उत्पादन नहीं होता को और न कोई आय प्राप्त होती हो, अनुत्पादक श्रम कहलाता है; जैसे– माँ का बच्चे का पालन करना। मनोरंजन हेतु खेल खेलना, गीत गाना आदि।

5. कुशल तथा अकुशल श्रम के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उ०– **कुशल और अकुशल श्रम में अंतर–** जब किसी कार्य को करने के लिए किसी विशेष प्रकार के प्रशिक्षण अथवा शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है तो इस प्रकार का श्रम कुशल श्रम कहलाता है; जैसे– डॉक्टर, इंजीनियर आदि। इसके विपरित जब किसी कार्य को करने हेतु किसी विशेष प्रशिक्षण अथवा शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ती तो ऐसा श्रम अकुशल श्रम कहलाता है; जेसे– मजदूर, नौकर, किसान आदि का श्रम।

6. अर्थशास्त्र में लगान से क्या आशय है? लगान की एक परिभाषा लिखिए।

उ०– **लगान का अर्थ–** भूमि का स्वामी भूमिपति कहलाता है। वह भूमि के उपयोग के बदले, उत्पादन में से जो प्रतिफल प्राप्त करता है, उसे **लगान** कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, "लगान वह किराया है, जो भूमिपति को भूमि के उपयोग के बदले में भुगतान किया जाता है।" अर्थात् संयुक्त उत्पादन में से जो अंश भूमिपति को दिया जाता है, लगान के नाम से जाना जाता है।

लगान की परिभाषा– विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने लगान की अनेक परिभाषाएँ दीं हैं, उनमें से एक निम्नवत है–

लगान भूमि की उपज का वह भाग है, जो भूमि की मौलिक तथा अविनाशी शक्तियों के उपयोग के बदले भूस्वामी को दिया जाता है।

7. रिकोर्डो के लगान सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

उ०– **रिकोर्डो का लगान सिद्धांत–** रिकोर्डो ने अपना लगान सिद्धांत उपर्युक्त शब्दों के माध्यम से प्रतिपादित किया, उनके लगान सिद्धांत की मान्यताएँ निम्नवत् हैं–

(i) लगान केवल भूमि को ही दिया जाता है।

(ii) लगान भूमि की उर्वरता में पाए जाने वाले अंतर का प्रतिफल है।

(iii) जनसंख्या बढ़ने से जैसे खाद्य सामग्री की खपत बढ़ती है, कृषि व्यवसाय में अंततः प्रतिफल ह्रासमान नियम लागू हो जाता है।

सिद्धांत की व्याख्या– रिकोर्डो के लगान सिद्धांत की व्याख्या निम्नलिखित तीन आधारों पर की जाती है–

(i) विस्तृत खेती

(ii) गहन खेती

(iii) भूखंडों की स्थिति।

विशाल भूखंडों में मशीनों से खेती करना विस्तृत खेती कहलाता है। जनसंख्या बढ़ने पर कम उपजाऊ भूमि भी खेती करने में प्रयुक्त की जाने लगती है, जिसमें अपेक्षाकृत उत्पादन कम होता है। उपजाऊ भूमि और कम उपजाऊ भूमि की उपज की मात्रा के अंतर को रिकार्डो ने लगान नाम दिया है। उपजाऊ भूमि का स्वामी सर्वाधिक लगान प्राप्त करता है। कम उपजाऊ भूमि उसके अनुसार सीमांत भूमि होती है। यह भूमि लगान रहित भूमि कहलाती है। लगान का निर्धारण उपजाऊ भूमि की उपज तथा सीमांत भूमि की उपज के अंतर से किया जाता है।

8. मजदूरी से क्या आशय है? नकद मजदूरी तथा असल या वास्तविक मजदूरी में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ०– **मजदूरी का अर्थ–** उत्पादन प्रक्रिया में श्रम द्वारा सक्रिय सहयोग देने के बदले में संयुक्त उत्पादन में से जो अंश उसे प्राप्त होता है, उसे मजदूरी कहते हैं। अर्थशास्त्र की भाषा में, "संयुक्त उत्पादन में से श्रम को प्राप्त होने वाला भाग मजदूरी है।" मजदूरी श्रम के प्रयोग के बदले में दी जाने वाली 'कीमत' का नाम है।

नकद मजदूरी तथा असल या वास्तविक मजदूरी में अंतर– श्रमिक को उसके श्रम के प्रतिफल के रूप में, जो मुद्रा का भुगतान किया जाता है उसे नकद मजदूरी कहते हैं जबकि श्रमिक को नकद मजदूरी के रूप में प्राप्त मुद्रा के बदले में प्रचलित मूल्य पर जितनी वस्तुएँ और सेवाएँ प्राप्त होती हैं, वे सब मिलाकर उसकी असल या वास्तविक मजदूरी को सूचित करती हैं। वास्तविक मजदूरी के अंतर्गत उन सभी वस्तुओं और सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है जो श्रमिक को नकद मजदूरी के अतिरिक्त प्राप्त होती हैं; जैसे- कम कीमत पर मिलने वाला राशन, बिना किराए का मकान, पहनने के लिए मुफ्त वस्त्र व अन्य सुविधाएँ।

9. पूँजी की परिभाषा लिखिए। धन तथा पूँजी के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उ०– **पूँजी की परिभाषा–** प्रो० चैपमैन के अनुसार ''पूँजी वह धन है, जो आय का साधन बनता है या भावी आय प्रदान कराने में सहयोग देता है।''

पूँजी व धन में अंतर– वे सभी वस्तुएँ जो उपयोगी, दुर्लभ तथा विनिमय साध्य होती हैं, धन कहलातीं हैं; चाहे उत्पादन-कार्य में उनका उपयोग किया जाए अथवा नहीं। परंतु पूँजी धन का केवल वह भाग है जो उत्पादन-कार्य में लगा हुआ होता है। इस प्रकार पूँजी और धन के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि समस्त पूँजी धन होती है, परंतु समस्त धन को पूँजी नहीं कहा जा सकता है। पूँजी धन का एक अंग है। उदाहरण के लिए, यदि रुपए-पैसे हमारे पास हैं, तो यह धन कहा जाएगा, परंतु यदि रुपए-पैसे को जमीन में गाड़कर रख दिया जाए तो वह पूँजी नहीं होगा, क्योंकि उसका उपयोग उत्पादन के लिए नहीं हो रहा है। वही धन पूँजी है जो उत्पादन में लगी हो। इस प्रकार समस्त धन पूँजी नहीं होता, परंतु समस्त पूँजी धन होती है।

10. संगठन से आपका क्या आशय है? आधुनिक युग में इसका क्या महत्व है?

उ०– **संगठन का अर्थ–** उत्पादन के समस्त उपादानों (भूमि, श्रम, पूँजी) को एकत्रित करके उन्हें उचित व आदर्श अनुपात में उत्पादन कार्य में लगाना संगठन कहलाता है।

आधुनिक युग में संगठन का महत्व– आधुनिक युग में उत्पादन में संगठन के महत्व को निम्नवत् समझा जा सकता है–

(i) उत्पादन प्रक्रिया को ठीक से संचालित करने के लिए संगठनकर्ता रूपी महावत आवश्यक हो जाता है।

(ii) संगठनकर्ता उपादानों का आनुपातिक समन्वय तथा उन पर समुचित नियंत्रण बनाकर उत्पादन प्रक्रिया को सफल बनाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(iii) कुशल संगठन ही उद्योग का विस्तार तथा विकास करने में सहभागी बनता है।

(iv) व्यावसायिक तथा औद्योगिक क्षेत्र के सुखद वातावरण के निर्माण का भार संगठन के कंधों पर टिका होता है।

(v) संगठनकर्ता उत्पादों की श्रेष्ठता तथा मात्रा बढ़ाकर लाभ कमाने में सहायक बनता है।

(vi) संगठनकर्ता की सृजनशीलता उद्योग को उन्नति के चरम शिखर तक पहुँचाने में सक्षम होती है।

11. संगठन के कार्यों पर प्रकाश डालिए।

उ०– **संगठनकर्ता के कार्य–** संगठनकर्ता के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं–

(i) उत्पादन के लिए सफल योजना का ताना बाना-तैयार करना।

(ii) उत्पादन के लिए श्रेष्ठ उपादान जुटाना।

(iii) उपादानों का उचित अनुपात तथा समन्वय बनाना।

(iv) उद्योग के लिए नवीनतम मशीनें, यंत्र तथा कच्चे मालों की समुचित व्यवस्था करना।

(v) श्रम का उसकी कार्यक्षमता और कौशल के आधार पर दोहन करना।

(vi) उत्पादन की समस्त व्यवस्था का सूक्ष्म निरीक्षण नियमित रूप से करते रहना।

(vii) व्यवसाय की प्रगति के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी के लिए अनुसंधानों की समुचित व्यवस्था करना।

(viii) उत्पादित माल के विपणन हेतु नेटवर्क तैयार करना।

12. उद्यमी कौन होता है? एक सफल उद्यमी के गुणों का वर्णन कीजिए।

उ०– उत्पादन की क्रिया में, जो उपादान साहस के साथ जुटता है, उसे साहसी या उद्यमी कहा जाता है। प्रत्येक व्यवसाय में कुछ न कुछ जोखिम अवश्य रहता है। अत: व्यवसाय में अनिश्चितता का जोखिम वहन करने वाला उपादान साहसी या उद्यमी कहलाता है। उद्यमी व्यवसाय का सूत्रधार और स्वामी होता है।

सफल उद्यमी के गुण– एक आदर्श तथा सफल उद्यमी में निम्नलिखित गुण होने चाहिए–

(i) सफल उद्यमी में जोखिम वाले कार्यों को हाथ में लेने का साहस तथा व्यवसाय में जोखिम, अनिश्चितता, व संकटों का सामना करने का साहस, धैर्य तथा दृढ़ निश्चय होना आवश्यक है।

(ii) सफल उद्यमी के अंदर दूरदर्शिता का गुण आवश्यक है, ताकि बाजार में होने वाले परिवर्तनों जैसे– उपभोक्ताओं की रुचि तथा फैशन का पूर्वानुमान लगाकर वह अपने उत्पादों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर सके।

(iii) सफल उद्यमी को अपने व्यवसाय से संबंधित समस्याओं का समुचित ज्ञान तथा बारीकियों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

(iv) उद्यमी अपने उद्योग रूपी जहाज का कप्तान होता है। उसमें लोगों को प्रभावित करने और उनका विश्वास जीतने की योग्यता होनी चाहिए।

(v) संगठन की योग्यता किसी उद्यमी का वह गुण है, जिसका उपयोग करके वह श्रमिकों की योग्यता तथा क्षमतानुसार काम लेने में सफल होता है।

(vi) एक सफल उद्यमी को अर्थशास्त्र, वाणिज्य, बैंकिग तथा प्रबंधन के क्षेत्र का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, तभी वह दैनिक वित्तिय जटिलताओं को सुलझा सकेगा।

(vii) अपने व्यवसाय में पर्याप्त अनुभव रखने वाला उद्यमी सदैव सफल रहता है। उद्यमी जितना अनुभवी होगा, उसका व्यवसाय उतना की कुशलतापूर्वक संचालित होगा।

(viii) सफल उद्यमी में उचित निर्णय लेने की क्षमता के साथ-साथ नवीनतम् सुधारों, आविष्कारों व तकनीकों के प्रति सचेत रहने का गुण होना चाहिए, ताकि उनका प्रयोग करके वह न्यूनतम लागत पर अधिकाधिक उत्पादन कर सके।

13. निम्नांकित तालिका का अध्ययन कीजिए तथा उससे संबंधित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दैनिक मजदूरी (रुपयों में)	श्रम की माँग (श्रमिकों की संख्या)	श्रम की पूर्ति (श्रमिकों की संख्या)
60	300	60
70	160	70
80	100	100
90	50	150
100	25	200

(क) जब मजदूरी की दर बढ़ती है, तो श्रम की माँग एवं पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ख) मजदूरी का निर्धारण किस बिंदु पर होगा?

उ०– (क) दी गई तालिका से स्पष्ट है कि जब मजदूरी की दर बढ़ती है, तो श्रम की माँग घटती है और श्रम की पूर्ति बढ़ जाती है।

(ख) दी गई तालिका से स्पष्ट है कि दैनिक मजदूरी 80 रुपए होने पर श्रम की माँग और श्रम की पूर्ति दोनों बराबर हैं। अत: इसी बिंदु (मजदूरी 80 रूपए) पर मजदूरी का निर्धारण होगा।

14. निम्नांकित तालिका का अध्ययन कीजिए तथा उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दैनिक मजदूरी (रुपयों में)	श्रम की माँग (श्रमिकों की संख्या)	श्रम की पूर्ति (श्रमिकों की संख्या)
150	300	700
130	400	600
100	500	500
80	600	400
70	700	300

(क) मजदूरी का निर्धारण किस बिंदु पर होगा?

(ख) मजदूरी की दर कम होने पर श्रम की माँग और पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

उ०– (क) दी गई तालिका में मजदूरी 100 रुपए पर श्रम की मांग और श्रम की पूर्ति दोनों बराबर अर्थात् 100 हैं। अत: इसी बिंदु पर मजदूरी का निर्धारण होगा।

(ख) दी गई तालिका से स्पष्ट है कि मजदूरी की दर कम होने पर श्रम की माँग बढ़ती है और श्रम की पूर्ति घटती है।

❖ विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. उत्पत्ति (उत्पादन) से आपका क्या आशय है? उत्पत्ति के साधनों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उ०– उत्पादन– साधारण बोलचाल की भाषा में उत्पादन का अर्थ किसी वस्तु या पदार्थ के निर्माण से होता है। उदाहरण के लिए, कृषकों द्वारा गेहूँ, चावल आदि पैदा करना तथा कारखाने में श्रमिकों द्वारा कपड़ा बनाना, चूड़ी अथवा अन्य औद्योगिक वस्तुओं के निर्माण को उत्पादन कहा जाता है। किन्तु वैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य न तो किसी वस्तु या पदार्थ को उत्पन्न कर सकता है और न ही नष्ट कर सकता है। वह केवल पदार्थ या वस्तुओं के स्वरूप को बदलकर उन्हें अधिक उपयोगी बना सकता है। दूसरे शब्दों में, वह वस्तु में उपयोगिता का सृजन कर सकता है। **मार्शल** के शब्दों में, ''मनुष्य पदार्थ उत्पन्न नहीं कर सकता, वह केवल उसके अंदर विद्यमान उपयोगिता का सृजन कर सकता है।'' अत: अर्थशास्त्र में उत्पादन का अर्थ वस्तु-निर्माण से नहीं है, वरन् वस्तु में उपयोगिता का सृजन करना ही उत्पादन कहलाता है। **थॉमस** के अनुसार, ''वस्तु की उपयोगिता में वृद्धि करना ही उत्पादन है।''

उत्पादन के साधन– उत्पादन की प्रक्रिया में पाँच उपादान (साधन) सहयोग देते हैं– (i) भूमि, (ii) श्रम, (iii) पूँजी, (iv) प्रबंध या संगठन तथा (v) साहस या उद्यम।

(i) भूमि– भूमि उत्पादन का अनिवार्य और निष्क्रिय साधन है। सामान्य रूप से भूमि का अर्थ पृथ्वी की ऊपरी सतह से लगाया जाता है। अर्थशास्त्र में भूमि शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। अर्थशास्त्र की भाषा में वे सभी पदार्थ जो प्रकृति ने मुनष्य को नि:शुल्क प्रदान किए हैं, भूमि कहलाते हैं। भूमि प्रकृति का अत्यंत उपयोगी और नि:शुल्क उपहार है। भूमि मानव का जन्म स्थल, क्रियाकलापों का केंद्र और शरण स्थली है।

(ii) श्रम– मुद्रा रूपी फल का स्वाद चखने हेतु किया गया शारीरिक एवं मानसिक कार्य श्रम कहलाता है। श्रम उत्पादन का अनिवार्य और सक्रिय साधन है। श्रम उत्पादन का जन्मदाता है, श्रम वह पारस पत्थर है, जिसका स्पर्श पाते ही उत्पादन के निष्क्रिय साधन भी सोना उगलने लगते हैं। धन कमाने के लिए श्रमिक, कुली, डॉक्टर, वकील अथवा इंजीनियर का प्रयास श्रम की श्रेणी में आता है। दूसरे शब्दों में, "आर्थिक क्रियाओं के लिए किए गए समस्त प्रयास श्रम कहे जाते हैं।" शिक्षित तथा प्रशिक्षित श्रम, कुशल-श्रम कहलाता है, जबकि अप्रशिक्षित श्रम को अकुशल श्रम कहते हैं।

(iii) पूँजी– अर्थशास्त्र में धन संपत्ति तथा मुद्रा को पूँजी नहीं कहा जाता। "पूँजी मनुष्य द्वारा अर्जित किए गए धन का वह भाग है, जो भविष्य के लिए धन उत्पादन में लगा है।" उदाहरण के लिए एक किसान के पास 20 कुंतल गेहूँ है– उसमें से 5 कुंतल गेहूँ उसने बीज के रूप में खेतों में बो दिया। अत: 5 कुंतल गेहूँ उसकी पूँजी होगी। कृषक का ट्रैक्टर, नलकूप, खाद तथा अन्य उपकरण, जो वह कृषि उत्पादन में प्रयुक्त करता है, पूँजी माने जाते हैं।

(iv) **संगठन–** उत्पादन के साधनों को उचित अनुपात में व्यवस्थित कर उत्पादन प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने वाला उपादान 'संगठनकर्ता' या प्रबंधक कहा जाता है। संगठनकर्ता उत्पत्ति रूपी रेल के इंजन का चालक होता है। उत्पत्ति की रेल की गति एवं उसे सफलतापूर्वक गंतव्य तक पहुँचाने का दायित्व उसी पर निर्भर है।

(v) **उद्यम या साहस–** प्रत्येक व्यवसाय या उत्पादन कार्य में कुछ जोखिम या अनिश्चित्ता होती है, क्योंकि उत्पादन की मात्रा भविष्य की माँग पर आधारित होती है। यदि माँग का अनुपात ठीक रहता है तब उद्यमी को लाभ होता है, अन्यथा हानि ही होती है। उत्पादन कार्य में लाभ व हानि दोनों की संभावना होती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र में ''किसी उत्पादन या व्यवसाय की अनिश्चितत या जोखिम को उद्यम या साहस कहते हैं।'' इस अनिश्चितता को सहन करने वाले व्यक्ति को उद्यमी या साहसी कहते हैं।

2. वितरण किसे कहते हैं? वितरण की दो परिभाषाएँ लिखिए।

उ०– उत्तर के लिए लघु उत्तरीय प्रश्न संख्या- 3 के उत्तर का अवलोकन कीजिए।

3. उत्पादन के साधन के रूप में भूमि के लक्षणों तथा महत्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– भूमि के लक्षण एवं महत्व– उत्पादन के साधन के रूप में भूमि के मुख्य लक्षण तथा महत्व इस प्रकार हैं–

(i) **भूमि प्रकृति का नि:शुल्क उपहार है–** भूमि मनुष्य के उपयोग के लिए प्रकृति का नि:शुल्क उपहार है। मनुष्य को इसके लिए कोई मूल्य नहीं चूकाना पड़ता। पानी, वायु, प्रकाश, गर्मी, सर्दी आदि को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को कुछ नहीं करना पड़ता है। ये सभी उपहार प्रकृति ने स्वेच्छा से मनुष्य की सहायता के लिए नि:शुल्क दिए हैं। कुछ अर्थशास्त्रियों का विचार है कि आधुनिक युग में मनुष्य जिस भूमि को उपयोग में ला रहा है, वह उसे निर्मूल्य नहीं मिलती, वरन् अन्य साधनों की भाँति मूल्य देने से ही प्राप्त होती है।

(ii) **भूमि की मात्रा सीमित है–** भूमि प्रकृति की देन है। भूमि के क्षेत्र को घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता । भूमि का क्षेत्रफल उतना ही रहता है जितना प्रकृति ने हमें प्रदान किया है। भूमि मानव-निर्मित नहीं है और न ही मानव द्वारा इसे निर्मित किया जा सकता है। भूमि का स्वरूप प्राकृतिक कारणों से बदल सकता है, परंतु भूमि के क्षेत्र या मात्रा में वृद्धि नहीं हो सकती है।

(iii) **भूमि स्थायी है–** भूमि में स्थायित्व का गुण पाया जाता है। सृ ष्टि के आदिकाल से आज तक भूमि किसी-न-किसी रूप में सदैव विद्यमान रही है। भूकम्प या प्राकृतिक प्रकोपों से जल के स्थान पर स्थल तथा पहाड़ के स्थन पर समुद्र बन सकते हैं। भूमि के स्वाभावित गुण होते हैं, जिन्हें **रिकार्डो** ने 'मौलिक तथा अविनाशी' कहा है। भूमि अक्षय है तथा कभी नष्ट नहीं होती। इसके लगातार प्रयोग से इसकी उर्वरा शक्ति में कुछ कमी आ जाती है अथवा इसी ऊपरी सतह में कुछ परिवर्तन भी हो जाता है। इन्हें उपयुक्त उपायों द्वारा ठीक किया जा सकता है। वस्तुत: भूमि अविनाशी है।

(iv) **भूमि उत्पादन का निष्क्रिय साधन है–** भूमि स्वयं उत्पादन कार्य करने में असमर्थ है। जब तक अन्य साधनों का इसे सहयोग प्राप्त नहीं होता, यह उत्पादन कार्य नहीं कर सकती। मनुष्य द्वारा श्रम और पूँजी लगाने से उत्पादन किया जाता है। इस दृष्टि से भूमि उत्पादन का निष्क्रिय उत्पादन है।

(v) **भूमि विविध प्रकार की होती है–** उत्पादकता, स्थिति तथा प्रयोग की दृष्टि से भूमि में विविधता पाई जाती है। भूमि अधिक या कम उपजाऊ हो सकती है। शहर के अंदर या समीप की भूमि मकान बनाने के लिए अधिक उपयुक्त होती है, जबकि गाँव की भूमि कृषि कार्य के लिए। इसी प्रकार किसी स्थान पर भूमि में खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं तो समतल भूमि में उत्तम खेती होती है। भूमि को विविध प्रयोगों में भी लाया जा सकता है; जैसे-कृषि के लिए, मकान बनाने के लिए या उद्योगों को स्थापित करने के लिए।

(vi) **भूमि में गतिशीलता का अभाव है–** भूमि में गतिशीलता का गुण नहीं पाया जाता। भूमि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं ले जाया जा सकता। हिमालय पर्वत को इंग्लैंड नहीं ले जाया जा सकता। इसी प्रकार गंगा नदी को दूसरे महाद्वीप में प्रवाहित नहीं किया जा सकता तथा कोलार की सोने की खान उत्तर प्रदेश में नहीं लायी जा सकती।

(vii) **भूमि की स्थिति सापेक्ष होती है–** भूमि की कीमत स्थिति के अनुसार होती है। शहरी भूमि की कीमत अधिक होतीहै, जबकि गाँव की भूमि की कीमत शहर की अपेक्षा कम। इसी प्रकार समतल या दोमट मिट्टी वाली भूमि की कीमत ऊसर तथा बंजर भूमि की अपेक्षा अधिक होती है। भूमि की स्थिति की तुलना करके ही लगान व कीमत निर्धारित की जाती है।

(viii) **भूमि उत्पादन का प्रमुख उपादान है–** भूमि उत्पादन का एक अनिवार्य और आधारभूत उपादान है। भूमि के अभाव में उत्पादन को सम्पादित करना असंभव है। आर्थिक दृष्टि से प्रत्येक प्रकार का उत्पादन; जैसे- कृषि, उद्योग, व्यापार, व्यवसाय आदि अंतत: भूमि की उपलब्धता पर निर्भर करते हैं।

4. उत्पादन के साधन के रूप में श्रम की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– उत्पादन के साधन के रूप में श्रम की विशेषताएँ–

श्रम के लक्षण या विशेषताएँ– श्रम के प्रमुख लक्षण या विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) श्रम उत्पादन का सक्रिय साधन है। श्रम ही उत्पादन के अन्य साधनों को सक्रिय बनाता है।

(ii) श्रम उत्पादन का अनिवार्य साधन है, उसके बिना उत्पादन का कार्य करना असंभव है।

(iii) श्रम नाशवान है, उसका संचय नहीं किया जा सकता है।

(iv) श्रमिक थक जाता है। अत: श्रम का निरंतर प्रयोग करना संभव नहीं है।

(v) श्रम को श्रमिक से पृथक नहीं किया जा सकता है।

(vi) श्रम वस्तुओं का उत्पादक और उपभोक्ता दोनों होता है।

(vii) श्रम गतिशील होता है। वह एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में चला जाता है।

(viii) श्रम को प्रशिक्षण तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी का ज्ञान कराकर अधिक कार्यकुशल बनाया जा सकता है।

(ix) श्रम की पूर्ति को धीरे-धीरे घटाया जा बढ़ाया जा सकता है।

(x) श्रम शक्ति, बुद्धि, तर्क तथा विवेक का स्रोत होता है।

(xi) श्रम के अभाव में उत्पादन प्रक्रिया संपन्न होनी संभव नहीं है।

(xii) श्रम ही वह उपादान है, जो उत्पादन में अन्य उपादानों को सक्रिय कर, उत्पादन कार्य पूरा करता है।

(xiii) श्रम अपनी कुशलता और योग्यता से श्रेष्ठ उत्पादन करके, उत्पादन का लक्ष्य पूरा कर सकता है।

(xiv) श्रम मशीनों तथा यंत्रों का कुशलतापूर्वक संचालन करके उत्पादन प्रक्रिया का चक्र पूरा करता है।

(xv) श्रम नवीनतम मशीनों तथा आधुनिक तकनीकी के प्रयोग से उत्पादन प्रणाली को जीवंत बना देता है।

5. श्रम की परिभाषा दीजिए तथा उत्पादन में उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– **श्रम की परिभाषा–** इसके लिए लघु उत्तरीय प्रश्न संख्या- 4 के उत्तर का अवलोकन कीजिए।

श्रम का उत्पादन में महत्व- इसके लिए विस्तृत उततरीय प्रश्न संख्या- 4 के उत्तर का अवलोकन कीजिए।

6. मजदूरी किसे कहते हैं? मजदूरी का निर्धारण कैसे होता है?

उ०– **मजदूरी का अर्थ–** उत्पादन प्रक्रिया में श्रम द्वारा सक्रिय सहयोग देने के बदले में संयुक्त उत्पादन में से जो अंश उसे प्राप्त होता है, उसे मजदूरी कहते हैं। अर्थशास्त्र की भाषा में, "संयुक्त उत्पादन में से श्रम को प्राप्त होने वाला भाग मजदूरी है।" मजदूरी श्रम के प्रयोग के बदले में दी जाने वाली 'कीमत' का नाम है।

मजदूरी की परिभाषाएँ– विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने मजदूरी को निम्नवत् परिभाषित किया है–

"श्रम की सेवा के बदले में दिया गया मूल्य मजदूरी है।" **–प्रो० मार्शल**

प्रो० मार्शल के शब्दों में मजदूरी श्रम प्रयोग का मूल्य है, जो श्रमिक को चुकाया जाता है।

"श्रम की सेवाओं के लिए प्रदान की जाने वाली कीमतें मजदूरी कहलाती हैं।" **–प्रो० एली**

प्रो० एली के अनुसार श्रमिक की शारीरिक अथवा मानसिक सेवाओं के लिए, जो मूल्य चुकाया जाता है, उसे ही मजदूरी कहा जाता है।

मुद्रा की वह मात्रा, जो श्रमिक को प्रतिदिन, प्रति सप्ताह या प्रतिमाह चुकाई जाती है, नकद मजदूरी कहलाती है, जबकि नकद मजदूरी के रूप में प्राप्त होने वाली मुद्रा के बदले में प्रचलित मूल्य पर जितनी वस्तुएँ एवं सेवाएँ प्राप्त होती हैं, असल मजदूरी कहलाती है।

मजदूरी का निर्धारण– श्रम को उसके प्रतिफल के रूप में, जो मजदूरी दी जाती है, उसका निर्धारण कैसे हो, इसके लिए अर्थशास्त्रियों ने सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इन सभी सिद्धांतों में 'माँग एवं पूर्ति का सिद्धांत' सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मजदूरी -निर्धारण के इस आधुनिक सिद्धांत के अनुसार, "मजदूरी का निर्धारण श्रम की माँग तथा पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों के द्वारा होता है। यह उस साम्य बिन्दु पर निर्धारित की जाती है, जहाँ श्रम की माँग और पूर्ति एक समान होती हैं।"

(i) श्रम की माँग– उत्पादक श्रम की माँग करता है। वह उत्पादन में श्रम की नई इकाइयाँ तब तक लगाता है, जब तक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त उत्पादन सीमांत उत्पादक श्रम के मूल्य के बराबर न हो जाए। अर्थात् मजदूरी की न्यूनतम सीमा श्रम की सीमांत उत्पादकता के बराबर होगी। यही श्रमिक की अधिकतम मजदूरी होगी, क्योंकि इसके बाद श्रम की माँग नहीं रहेगी।

(ii) श्रम की पूर्ति– श्रमिक अपने जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए व्यय के बराबर मजदूरी मिलने पर, स्वयं को प्रस्तुत करता है। इसे श्रम की पूर्ति कहा जाता है। "श्रम की पूर्ति के अनुरूप मजदूरी की न्यनूतम सीमा श्रमिकों के जीवन स्तर द्वारा तय होती है।" जीवन स्तर की लागत से कम मजदूरी पर श्रम की पूर्ति नहीं होती।

मजदूरी-निर्धारण का तालिका द्वारा स्पष्टीकरण– मजदूरी-निर्धारण के माँग और पूर्ति के सिद्धांत को अग्रलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है–

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि मजदूरी बढ़ने के साथ श्रम की पूर्ति बढ़ती है तथा मजदूरी घटने के साथ श्रम की पूर्ति घट जाती है। मजदूरी का निर्धारण श्रम की माँग और पूर्ति के बराबर होने पर साम्य बिंदु 80 रुपए पर होगा।

दैनिक मजदूरी (रुपयों में)	श्रम की माँग (श्रमिकों की संख्या)	श्रम की पूर्ति (श्रमिकों की संख्या)
40	200	25
60	150	50
80	100 ← साम्य बिंदु	→ 100
100	50	125
120	25	175

मजदूरी निर्धारण सिद्धांत का रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण– रेखाचित्र में OX रेखा पर DD श्रम की माँग एवं SS पूर्ति को दर्शाया गया है। जबकि OY लंब पर मजदूरी रुपयों में दर्शाई गई है। मजदूरी बढ़ने पर श्रम की माँग घटती है, जबकि पूर्ति बढ़ती है। 80 रुपए की दैनिक मजदूरी पर श्रम की माँग 100 श्रमिक है, जबकि श्रम की पूर्ति भी 100 श्रमिक है। अत: P बिंदु श्रम की माँग और श्रम की पूर्ति का साम्य बिंदु है। इसी साम्य बिंदु पर दैनिक मजदूरी 80 रुपए निश्चित होगी।

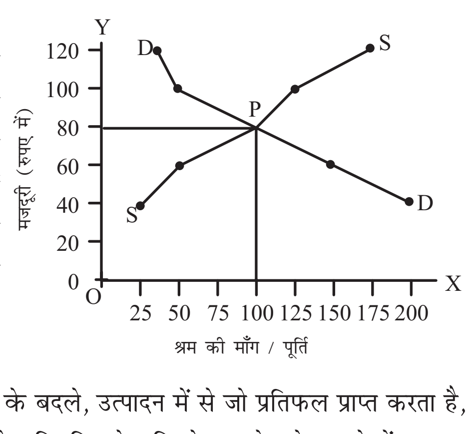

7. लगान क्या है? लगान के आधुनिक सिद्धांत को समझाइए।

उ०– **लगान–** भूमि का स्वामी भूमिपति कहलाता है। वह भूमि के उपयोग के बदले, उत्पादन में से जो प्रतिफल प्राप्त करता है, उसे **लगान** कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, "लगान वह किराया है, जो भूमिपति को भूमि के उपयोग के बदले में भुगतान

किया जाता है।" अर्थात् संयुक्त उत्पादन में से जो अंश भूमिपति को दिया जाता है, लगान के नाम से जाना जाता है।

लगान का आधुनिक सिद्धांत– रिकार्डों के लगान सिद्धांत की कटु आलोचनाओं ने अर्थशास्त्रियों को एक नया सिद्धांत प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया, जिसे लगान का आधुनिक सिद्धांत कहा गया। आधुनिक अर्थशास्त्री मानते हैं कि लगान का निर्धारण माँग और पूर्ति के आधार पर किया जाता है। उनका मत है कि उत्पादन का प्रत्येक साधन अपनी विशिष्टता के आधार पर लगान पाने का अधिकारी है। क्योंकि "लगान विशिष्टता का पुरस्कार होता है।" आधुनिक लगान के सिद्धांत की मुख्य प्रतिपादक जॉन रॉबिन्सन हैं। उन्होंने लगान को इन शब्दों में परिभाषित किया है, "उत्पादन के साधन की एक इकाई का लगान, उसे प्राप्त वह आधिक्य है, जो उसे उस कार्य के बनाए रखने के लिए दिए जाने वाले आवश्यक न्यूनतम पारिश्रमिक से अधिक है।" आधुनिक लगान के सिद्धांत को प्रो० बोल्डिंग ने इन शब्दों में व्यक्त किया है, "आर्थिक लगान, उत्पादन के साधन को प्राप्त होने वाले किसी भी भुगतान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो कि इसके कुल प्रति मूल्य से अधिक होता है अर्थात् साधन को वर्तमान उपयोग में बनाए रखने के लिए न्यूनतम् राशि के अतिरिक्त प्राप्त होता है।" लगान के आधुनिक सिद्धांत को निम्न सूत्र के माध्यम से समझा जा सकता है–

लगान = वास्तविक आय – अवसर लागत

वर्तमान आय को वास्तविक आय कहते हैं। साधन को किसी अन्य प्रयोग में लगाने से, जो आय प्राप्त होती है, उसे अवसर लागत या हस्तांतरण आय कहा जाता है।

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण– मान लीजिए एक प्रबंधक को एक कारखाने में 80,000 रुपये मासिक वेतन मिलता है, जबकि वह दूसरे व्यवसाय से 60,000 रुपए मासिक ही प्राप्त कर पाएगा। इस प्रकार, 80,000 रुपए – 60,000 रुपए = 20,000 रुपए उसकी अवसर आय के ऊपर बचत है। यही लगान कहा जाता है। मान लीजिए कि एक भूखंड से गेहूँ उगाने पर 40,000 रुपये की आय प्राप्त हुई, यदि भूमि के उसी खंड में गन्ना बोया जाता, तो उसे मात्र 30,000 रुपए की ही आय प्राप्त हो पाती है। अत: 40,000 रुपए – 30,000 रुपए = 10,000 रुपए आर्थिक लगान होगा, जिसे विशिष्टता का भुगतान कहा जाता है।

8. पूँजी से आप क्या समझते हैं? उत्पादन में पूँजी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उ०– पूँजी– इसके लिए विस्तृत उत्तरीय प्रश्न संख्या-1 के उत्तर का अवलोकन कीजिए।

पूँजी का उत्पादन में महत्व– पूँजी उत्पादन का अनिवार्य और महत्वपूर्ण साधन है, उसके बिना उत्पादन चक्र पूरा ही नहीं होता। अत: उत्पादन में उसके महत्व को निम्नवत् स्पष्ट किया जा सकता है–

(i) बड़े पैमाने के उत्पादन में मशीनें तथा उपकरण पूँजी के माध्यम से ही उपलब्ध कराए जाते हैं।

(ii) पूँजी ही अपने बल पर उद्योगों को कच्चे माल सुलभ कराती है।

(iii) परिवहन तथा संचार-तंत्र का जाल फैलाने में पूँजी का अद्वितीय योगदान रहता है।

(iv) भूमि का लगान, श्रमिक की मजदूरी, प्रबंधक का वेतन तथा उद्यमी का लाभ पूँजी द्वारा ही संभव बन पाते हैं।

(v) पूँजी ही वह तंत्र है, जो कारखानों में उत्पादन की निरंतरता को बनाए रखता है।

(vi) पूँजी के प्रयोग से ही उत्पादक अपने उत्पाद की बिक्री के लिए नेटवर्क का निर्माण कर पाता है।

(vii) पूँजी का विनिवेश व्यक्तिगत आय तथा राष्ट्रीय आय के साथ-साथ रोजगार के नए अवसर जुटाने में भी सहायक बनता है।

पूँजी वह आधारशिला है, जिस पर राष्ट्र का भव्य औद्योगिक भवन खड़ा हो पाता है।

9. संगठन से आप क्या समझते हैं? संगठनकर्ता में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

उ०– संगठनकर्ता के गुण– एक संगठनकर्ता में निम्नलिखित गुण होने की अपेक्षा की जाती है–

(i) संगठनकर्ता दूरदर्शी होना चाहिए, ताकि वह उत्पादन में होने वाले परिवर्तनों का पूर्व अनुमान लगा सके।

(ii) संगठनकर्ता में संगठन करने की प्रतिभा तथा कौशल कूट-कूटकर भरा होना चाहिए।

(iii) संगठनकर्ता में मनोवैज्ञानिक क्षमता होनी चाहिए, ताकि वह श्रमिकों की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को जानकर उनकी क्षमता, योग्यता व रुचि के अनुसार काम करवा सके।

(iv) संगठनकर्ता संबंधित उद्योग के बारे में सामान्य ज्ञान रखता हो। उसे प्रौद्योगिकी, तकनीकी जानकारी तथा विपणन की कला में पारंगत होना चाहिए।

(v) संगठनकर्ता जितना साहसी और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होगा, वह उद्योग को उतनी ऊँची सफलता दिलाने में सक्षम होगा।

(vi) संगठनकर्ता व्यवहार-कुशल, ईमानदार, मृदुभाषी, निष्पक्ष तथा चरित्रवान होना चाहिए। उसमें श्रमिकों व ग्राहकों आदि को संतुष्ट रखने की क्षमता होनी चाहिए।

10. साहस या उद्यमी से आप क्या समझते हैं? उद्यमी के प्रमुख कार्यों पर प्रकाश डालिए।

उ०– **साहसी या उद्यमी का अर्थ–** उत्पादन की क्रिया में, जो उपादान साहस के साथ जुटता है, उसे साहसी या उद्यमी कहा जाता है। प्रत्येक व्यवसाय में कुछ न कुछ जोखिम अवश्य रहता है। अत: व्यवसाय में अनिश्चितता का जोखिम वहन करने वाला उपादान साहसी या उद्यमी कहलाता है। उद्यमी व्यवसाय का सूत्रधार और स्वामी होता है।

साहसी या उद्यमी की परिभाषा– साहसी या उद्यमी को अर्थशास्त्रियों ने निम्नवत् परिभाषित किया है–

''उत्पादन में जोखिम उठाने वाला उपादान उद्यम होता है।'' **–हैने**

हैने के अनुसार प्रत्येक उद्यम में जोखिम निहित रहता है, इस जोखिम को वहन करने वाले साधन को साहसी या उद्यमी कहते हैं।

''उत्पादन में सदैव कुछ न कुछ जोखिम रहता है। इस जोखिम से उत्पन्न होने वाली हानियों को सहन करने के लिए किसी न किसी व्यक्ति की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति इन हानियों को सहन करता है, उसे साहसी या उद्यमी कहते है।''

–प्रो० जे० के० मेहता

प्रो० मेहता के अनुसार उत्पादन में जो व्यक्ति हानि उठाने का जोखिम वहन करने के लिए तैयार होता है, उसे साहसी या उद्यमी कहा जाता है।

उद्यमी के कार्य– उद्यमी द्वारा अग्रलिखित कार्य संपन्न किए जाते हैं–

(i) उद्यमी का मुख्य कार्य उत्पादन में जोखिम को वहन करना होता है।

(ii) उद्यमी अपने साधनों, अनुभवों, योग्यताओं तथा जोखिमों को ध्यान में रखकर व्यवसाय का चुनाव करता है।

(iii) उद्यमी उत्पादन हेतु उचित वस्तु का चुनाव करता है।

(iv) उद्यमी उत्पादन हेतु उचित कार्य-स्थल का चुनाव बड़े ध्यानपूर्वक करता है।

(v) उद्यमी को उत्पादन की इकाई का आकार और उत्पादन का पैमाना चुनना होता है।

(vi) उद्यमी मशीनों, उपकरणों, कच्चे माल तथा श्रम की उचित व्यवस्था करता है।

(vii) उद्यमी नए-नए आविष्कारों की व्यवस्था के साथ-साथ विपणन तंत्र की भी समुचित व्यवस्था करता है।

(viii) उद्यमी को समस्त व्यवसाय पर नियंत्रण रखना होता है। व्यवसाय में नीतियों का निर्धारण तथा सभी विभागों को निर्देश देना भी उसका कार्य है।

(ix) उत्पादन से प्राप्त आय को भूमि, श्रम, पूँजी तथा संगठन आदि उपादानों को लगान, मजदूरी, ब्याज तथा वेतन के रूप में वितरित करना भी उद्यमी का दायित्व है।

❖ प्रोजेक्ट कार्य

अध्यापक की सहायतास से विद्यार्थी स्वयं करें।